"...उसे सदा स्मरण कराएँ कि मानव जाति पर उदात्त श्रद्धा के लिये खुद में गहरे आत्मविश्वास का होना लाजमी है।..."

कृपया उसे यह समझाएँ...

'मेरे बेटे को कृपया यह समझाएं कि दुनिया में सभी व्यक्ति न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ नहीं होते, लेकिन खुराफातियों और बदमाशों के बीच सद्पुरुषों की भी कभी कमी नहीं होती। स्वार्थी राजनीतिज्ञों की लंबी जमात में एक समर्पित नेता भी होता है और घाघ दुश्मनों की भीड़ में संरक्षण देने वाला अतिप्रिय स्नेही मित्र भी। उसके कोमल मन पर यह अंकित करना भी बेहद जरूरी है कि गाढ़े पसीने से कमाया गया एक रुपया भ्रष्ट आचरण से जुटाई बेशुमार दौलत से अधिक मूल्यवान है। हो सके तो मेरे बेटे को यह सिखाएं कि हार को कैसे स्वीकार जाता है और जीत को किस संयम के साथ ग्रहण करना चाहिये। उसे ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना तो बताएं हीं, कोमल मुस्कान का भेद भी खोलें।'

'उसे यह जानना होगा कि गुण्डों से आतंकित हुये बिना उन्हें झुकाना ही पुरुषार्थ है। उसे किताबों के रसमय और वैभवशाली संसार से परिचित कराएं और एहसास कराएं-मौन के बीच मिलने वाली ताजगी का। सृष्टि के शाश्वत सौंदर्य की अनुभूति के लिए उसे सुन्दर, नीले खुले आकाश में उड़ते पक्षियों की चहचहाहट और सुनहरी धूप में मंडराते भौरों, हरे-भरे पर्वतों में फैले फूलों को ताकने के आनन्द से भी परिचित कराएं।'

'आप ही उसे समझा सकेंगे कि धोखे और नकल से पाई सफलता के मुकाबले अनुत्तीर्ण होना ज्यादा बेहतर है। अपने विचारों और संकल्पों पर उसका दृढ़ विश्‍वास हो। सत्य के रास्ते पर वह सतत् चले, भले ही वह पथ दुर्गम हो और लोग उसे गलत कहें। वह भलों के साथ भला रहे, पर दुष्टों से निपटना भी उसे सिखाएं। उसे साहस और शक्ति भी प्रदान करें, जिससे वह मौकापरस्तों की भीड से अलग अपनी स्वतंत्र पहचान बना सके। वह सुने सबकी, पर सुनी हुई बातों को वह सच की छन्नी से जरूर छाने और केवल तथ्यों तथा अच्छाइयों को ग्रहण करे।'

'उसे सिखाएं कि उदासी में कैसे हँसा जा सकता है और यह भी कि पर-पीड़ा में द्रवित होने में शर्म कैसी! ओछी मानसिकता वाले लोगों को वह महत्व न दे और चापलूसों से सदा सावधान रहे। उसे इस बात का भी बोध कराएं कि अपनी अक्ल से वह भरपूर कमाये, पर अंतरात्मा को किसी भी कीमत पर न बेंचे। भौंकने वाले कुत्तों की परवाह किये बगैर वह भेड़-चाल में शामिल न हो, वरन् उसे सिखाएं कि सत्य एवं न्याय के पक्ष में किस हिम्मत और साहस के साथ डटकर खड़ा होना चाहिये।

'उसे समझाएं कि दहकती आग में तपे बगैर लोहा फौलाद नहीं बनता। सद्कार्यों को करने के लिये उसमें अधीरता और बेचैनी पैदा करें, पर अनावश्यक शौर्य-प्रदर्शन में वह धैर्य बरते। उसे यह सदा स्मरण कराएं कि मानव जाति पर उदात्त श्रद्धा के लिये खुद में गहरे आत्मविश्‍वास का होना लाजमी है।'

मैं जानता हूँ गुरुवर, मेरी अपेक्षाएँ आपसे कुछ ज्यादा ही हैं, पर देखें, जितना हो सके अवश्य करें, मेरे बेटे के लिये।

अमरीका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का बेटे के शिक्षक के नाम लिखा पत्र